

International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369

P-ISSN: 2709-9350

www.multisubjectjournal.com

IJMT 2025; 7(1): 44-48

Received: 24-11-2024

Accepted: 29-12-2024

सौरभ पटेल

सहायक आचार्य, समाज

शास्त्र विभाग एवं समाज

कार्य विभाग, मेवाड़

विश्वविद्यालय, गंगरार,

चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत

सहआचार्य, इतिहास विभाग,

मेवाड़ विश्वविद्यालय,

गंगरार, चित्तौड़गढ़,

राजस्थान, भारत

Corresponding Author:

सौरभ पटेल

सहायक आचार्य, समाज

शास्त्र विभाग एवं समाज

कार्य विभाग, मेवाड़

विश्वविद्यालय, गंगरार,

चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

महाराणा प्रताप की समकालीन प्रासंगिकता व उपलब्धियां

सौरभ पटेल, हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/multi.2025.v7.i1a.725>

प्रस्तावना

कठोर से कठोर परिस्थितियों में अविचलित रहने वाले स्वतंत्रता तथा संस्कृति जैसे शाश्वत मूल्यों की रक्षा के लिए जो जीवन समर्पित कर देता है उसकी प्रासंगिकता समय तथा स्थान से परे होती है। प्रताप ने अपना समस्त जीवन स्वतंत्रता और स्वाभिमान आदि की पूर्ति में उत्सर्ग कर दिया था। स्वप्न में भी अपने भौतिक सुख के लिए विश्व की बड़ी से बड़ी शक्ति के सामने भी अडिग रहा। अतः प्रताप की प्रासंगिकता 16वीं शताब्दी में जितनी थी उतनी ही गत चार सौ वर्षों में अनवरत बनी रही। कोई ऐतिहासिक कालखण्ड इसका अपवाद नहीं रहा। महाराणा प्रताप के काल (1572-97 ई.) में चुनौतियों का जो स्वरूप दिखाई देता है, वह विद्रूप एवं विकराल ही अधिक है। लोहा बनना था और लोहा लेना था। लोहा मनवाना भी तो था। प्रताप ने आसन्न चुनौतियों का मुकाबला अपनी जिन नीतियों और योजनाओं के तहत किया, वे उनके जीवनकाल में तो सफलतादायी रही ही, उनके बाद भी सफलधर्मा होकर मेवाड़ के लिए आदर्श बनीं। उनका चरित्र जिस सांचे में ढलकर सामने आया, वह चुनौतियों के ताप में तपकर प्रतापी हुआ और यही वजह है कि प्रताप को सदियों बाद भी चुनौतियों से मुकाबला करने वाले सफल नायक की हैसियत से जाना जाता है।



मेवाड़ का बहुआयामी विकास

विभिन्न जातियों, धर्मों एवं सम्प्रदायों के प्रति सहिष्णुता की नीति का पालन करने वाला 'हिंदुआ सूरज' उपाधि से विभूषित राणा प्रताप निरंकुश विदेशी सत्ता के विरुद्ध स्वातंत्र्य संघर्ष में सर्वस्व होम करने वाला अमर सेनानी, उदारशासक स्वयं के सुख-शांति और हितों का त्याग कर स्वदेश हितार्थ भीषण कष्टों का सामना करने वाला तपस्वी अपने चरित्र, नैतिकता और त्याग के बल पर सामान्य-जन का विश्वास हासिल कर उनका संगठन करने वाला जननायक, सांस्कृतिक समन्वयक का पोषक, सम्मानजनक शांति का पक्षपाति, कुशल सेनानायक एवं प्रशासक तथा अडिग प्रतिज्ञापालक हुआ। धीरगम्भीर व्यक्तित्व के धनी प्रताप को स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता और धर्मान्धता के दुर्गण स्पर्श भी न कर पाये। अपने अनुपम गुणों एवं महान उपलब्धियों के कारण ही भारतीय इतिहास के चिरस्मरणीय महानतम नायक राणा प्रताप श्रेष्ठ आदर्शों, नीतियों एवं समुज्ज्वलचरित्र-सम्पन्न, व्यवहार धनी, उच्च नैतिक मानवीय उभय गुणराशी का स्वामी अपने युग का महान आदर्श अद्भुत महामानव था जिनके तुल्य कोई नहीं था जिसके सन्दर्भ में - “किर्तीयस्य सः जीवती” यह आर्षोक्ति अक्षरषः सिद्ध होती है। युगों-युगों तक इस कीर्ति शेष अप्रतिम महापुरुष का जीवन व्यवहार, आचरण, आदर्श पाथेय-स्वातंत्र्य बली वेदी पर आत्माहुति अपर्णकर्ता देशभक्तों का पथ आलोकित करता रहा है।

प्रताप इतिहासवेत्ताओं के लिये एक आदर्श से सम्पन्न, शौर्य से परिपूर्ण योद्धा स्वतंत्रता प्रेमी, स्वदेश से परिपूर्ण नायक के रूप में आकर्षक का केन्द्र रहा है। परन्तु इन इतिहासकारों और साहित्यकारों ने प्रताप की प्रशासनिक योग्यता के बारे में जानने की कोशिश नहीं की, न ही उनका ध्यान प्रताप की कूटनीति और नई समर नीति पर भी कभी गया जिसके कारण उसने अकबर जैसे महत्वाकांक्षी शासक को अपने देश में टिकने नहीं दिया। उसके प्रशासनिक कौशल, सूझबूझ, दूरदर्शिता पर कभी गहराई से विचार ही नहीं किया गया। वस्तुतः प्रताप कुशल वीर योद्धा होने के साथ-साथ एक योग्य शासक भी था जिसने शान्तिकाल में मेवाड़ का हर क्षेत्र कला, साहित्य, कृषि, उद्योग और आर्थिक व्यवस्था, वाणिज्य में विकास किया तथा मेवाड़ को वह उच्च स्तर पर ले आया।¹

सन् 1572 के 28 फरवरी को प्रताप मेवाड़ की गद्दी पर बैठे, उनके 25 वर्ष के शासन काल को हमने तीन भागों में विभाजित किया- 1. राज्यारोहण से हल्दीघाटी के युद्ध से पूर्व तक 2. 1576ई. से 1586ई. का मेवाड़ मुगल संघर्ष काल 3. शान्तिकाल (1586ई. से 1597ई. तक)।

प्रताप की वैदेशिक नीति

वर्तमान भारत के संविधान में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की संकल्पना का मूल प्रताप की नीतियों में ही सन्निहित रहा जो कि 16 वीं शताब्दी में अपने शत्रु राष्ट्र की महिलाओं का भी सम्मान का पाठ सिखा कर गए और जिन्होंने धर्म के आधार पर किसी भी प्रकार के विभेद को अस्वीकार किया था, ऐसे थे प्रताप। जो 'दृढ़ राखे धर्म को तेहि राखे करतार' जैसे आदर्श वाक्य पर सुव्यवस्थित मेवाड़ राज्य का शासन कई पीढ़ियों से 7 वीं शताब्दी से लेकर 20 वीं शताब्दी तक अस्तित्वमान रहा है। हिंदुत्व के आदर्शों से परिपूर्ण प्रताप के लिए हिन्दू-मुसलमान समान थे, उनकी सेना में मुसलमान भी थे, उन्होंने मुगल अकबर के मनसबदार अब्दुल रहीम खानखाना के अन्तःपुर (जनाना, बीबी, बहव बेटियाँ, दासियाँ आदि) को कुंवर अमरसिंह द्वारा बंदी बनाने के उपरांत पुनः ससम्मान छोड़ दिया था²।

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत और शत्रु का शत्रु अपना मित्र
कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सन्दर्भ में मंडल सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसमें 12 राज्य या द्वादश राजमंडल के अंतर्गत विजिगिषु, अरि, मित्र, अरिमित्र आदि का वर्गीकरण किया है³ जिनका पालन करते हुए व्यवहारिक रूप में प्रताप ने मुगल शत्रु के शत्रु अफगानों को अपना मित्र स्वीकार करते हुए उनको मेवाड़ में शरण दी एवं अपनी सेना में स्थान दिया। सुज्ञात हैं कि प्रताप की सेना में हाकिम खां सूर और उनके मुस्लिम पठान सैनिक बड़ी संख्या में थे, यह बात अकाट्य सत्य है। परन्तु क्यों थे ? यह जानने, विश्लेषण करने का विषय है। इतिहास की गहराइयों में जायेंगे तो पायेंगे कि हाकिम खां 'पठान' थे। मुगल शासकों ने पठानों को पद दलित किया था अर्थात् मुगल बाबर ने अफगानी पठान इब्राहीम लोदी को एवं बैरम खां सहित मुगल अकबर ने अफगानी सुर शासकों को पराजित किया था। इसलिए वे प्रताप के पास आये थे ताकि वे मुगलों से बदला ले सकें। प्रताप ही थे जो

उनको शरण दे सकते थे। पठानों ने भी अपने प्राण देकर मित्रता धर्म निभाया।

प्रताप से बिना लड़े ही हार गया वह कट्टर मुस्लिम बैरम खां का बेटा रहीम जो कि प्रताप को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए अजमेर का सूबेदार बन कर आया था, वह प्रताप की जय जय कार करता हुआ, चुपचाप अपने डेरे समेट कर आगरा चला गया, अपने जीवन काल में वह कवि-हृदय रहीम कृष्ण कन्हैया के भजन गुनगुनाने लगा क्योंकि उसने हिंदुआ सूरज राणा के उच्च मानवीय मूल्यों के दर्शन भी कर लिए थे। इस सन्दर्भ में यह भी जानना आवश्यक है कि शासक जैसा देश चलाना चाहता है वैसा ही व्यवहार करता है।

एक अन्य उदाहरण हैं जालौर के शासक ताज खां का। राजनीति भी कहती है कि शत्रु का शत्रु अपना मित्र होता है। जनमानस जालौर के ताज खां को मुसलमान के रूप में तो जानते हैं, पर यह नहीं जानते कि वह पठान होने से अकबर का शत्रु था, इसलिए प्रताप की सहायता करता रहता था। प्रताप भी उसको अकबर के विरोध में उकसाते रहते थे।

इनके अतिरिक्त प्रताप ने अपने मैत्री सम्बन्ध सिरोही के राव सुरतान देवड़ा, ईडर के नारायणदास राठौड़⁴, जोधपुर के राव चन्द्रसेन सहित बूंदी के राव दुदा हाडा आदि से हमेशा बनाये रखे जिन्होंने पारस्परिक सहयोग करते हुए मुगल अकबर के विरुद्ध इस गठबंधन को प्रगाढ़ किया। राजस्थानी ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार प्रताप व चन्द्रसेन ने मिलकर अकबर के विरुद्ध सैनिक अभियानों की योजना बनाकर पुष्कर के आसपास मुगलों के अजमेर सूबे को लूटा।⁵ बूंदी के उत्तराधिकारी दुदा ने अपने राज्य में मुगल हस्तक्षेप होने पर प्रताप के सहयोग से मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर मुगल क्षेत्रों में लूटमार मचा दी।⁶

युवराज अमरसिंह ने मुगल मनसबदार अब्दूल रहीम खानखाना के अन्तःपुर या हरम को युद्ध बन्दियों के रूप में अपने पिता प्रतापश्री के सम्मुख प्रस्तुत किया। उनमें अकबर के सेनापति कवि रहीम की बीबी भी थी। प्रताप ने रहीम के जनाना को अपनी माँ-बहनों व बेटियों के तुल्य उचित सम्मान दिया और युवराज को फटकार लगाकर आदेशित किया कि इनको ससम्मान उस शत्रु या अब्दुल रहीम खानखाना के पास पहुंचा कर आये⁷ जो हिंदुआ सूरज मेवाड़ी राज्य को नष्ट करने के लिए मेवाड़ आया था। लोग इस बात पर महाराणा की बहुत प्रशंसा करते हैं। यह तो हिंदुआ सूरज की ही विशेषता है। यह 'मातृवत् परदारेषु' है। प्रताप और इनके पूर्वज साक्षी रहे हैं - मानव

मूल्यों, सिद्धान्तों के लिए अनेकानेक रक्तरंजित बलिदानों और अनेकानेक जौहर व्रतों के द्वारा सहस्रों वर्षों से जीवन मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखने के संकल्प के।

इस प्रकार प्रताप ने दुश्मन के खेमे में अपना एक शुभ चिन्तक तैयार कर लिया। यह प्रताप की कितनी बड़ी जीत है कि रहीम के मन में राणा के प्रति श्रद्धा भाव सृजित हुई और उसने लिखा कि-

धरम रहसी, रहसी धरा, खप जासी खुरसाण।

अमर विसम्भर ऊपरै, राख निहच्चो राणा॥⁸

अर्थात् धर्म रहेगा, धरा रहेगी और खुरासानी मर खप जायेंगे। हे राणा आप अमर विश्वम्भर उस परमपिता परमेश्वर पर विश्वास रखिये और खानखाना कवि रहीम की उक्त उक्ति उत्तर मध्यकाल में भी पुष्ट हो गई और आज भी स्वतः सत्य सिद्ध हो रही है।

“यथा राजा तथा प्रजा”

प्रताप और मेवाड़ी प्रजा का चरित्र

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत् देवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥⁹

श्रीमद्भगवद्गीता

जैसे राजा, वैसी ही प्रजा या फिर ये भी सत्य ही हैं कि जैसी प्रजा, वैसा ही राजा अर्थात् जो-जो श्रेष्ठ व्यक्ति आचरण करता है, अन्य लोग भी उनका अनुकरण कर वैसा ही आचरण करते हैं। वह श्रेष्ठ व्यक्ति अपने आचरण से जो प्रमाण स्थापित करता है, सम्पूर्ण समाज उसी का अनुकरण करता है। महाराणा प्रताप भी उन युगपुरुषों में थे जिन्होंने अपने जीवन में कष्ट सहकर भी अपने देश को विदेशी आक्रान्ताओं से स्वतंत्र रखा। उन्होंने अपने शौर्य, साहस, धैर्य, स्वाभिमान, त्याग, तपस्या, समाज के प्रति दायित्व के भाव, स्वदेश प्रेम व भक्ति को न केवल जीवित-जागृत रखा अपितु उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग को ही वैसा करने के लिये कटिबद्ध किया। प्रताप के साथ जनमानस भी उठ खड़ा हुआ। उसने अपने व्यवहार और आचरण से जो आदर्श खड़े किये, जन सामान्य ने उनका अनुकरण किया। प्रताप ऐसे दिव्य यौद्धा जीवन से परिपूर्ण थे कि उनके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति भी वैसा ही बन जाता था। उनके बारे में इतिहासकारों,

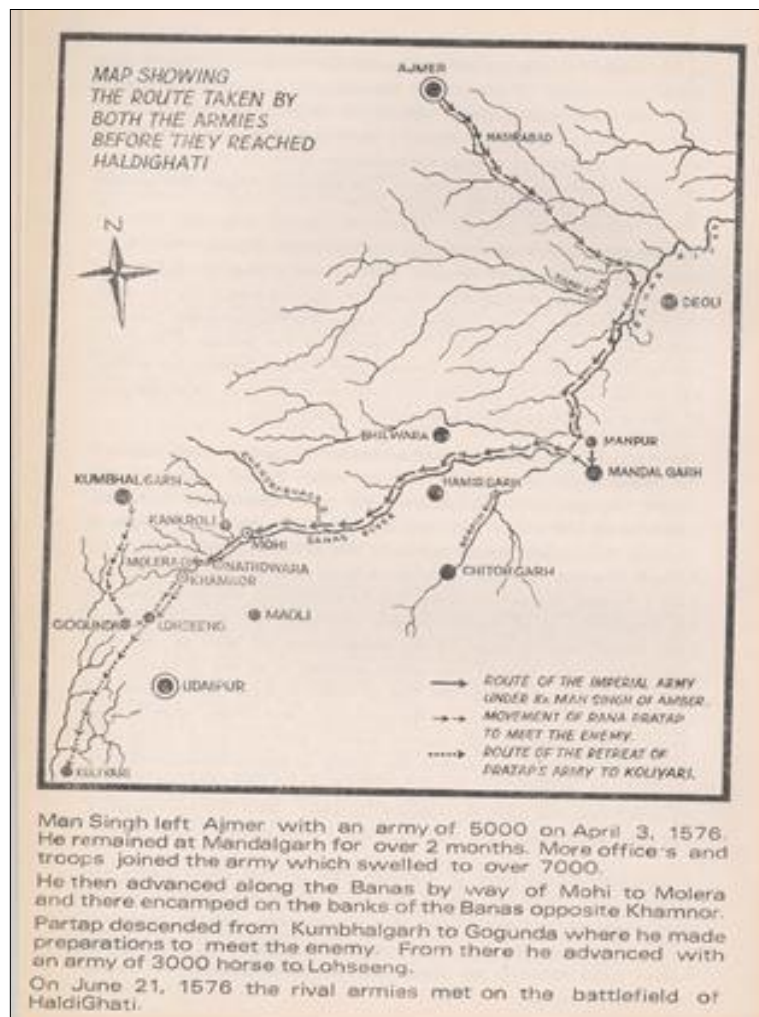
साहित्यकारों ने हर युग में लिखा है और आज 21वीं शताब्दी में भी लिख रहे हैं। आज भी प्रताप हर देशवासी के लिये प्रेरणा पुंज हैं। उन्होंने अपने जीवन में जो कीर्तिमान स्थापित किये, समस्त समाज उनका आज भी अनुकरण करने को तत्पर है।

एक तरफ तो जोधपुर के मोटा राजा उदय सिंह और भारमल, भगवानदास व मानसिंह कच्छवाहा जैसे आमेर के शासक थे जिन्होंने सत्ता के लिए अपने भाई बंधुओं को मारा और फिर यवनों या मुगल जैसी वैदेशिक आक्रान्ता से वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये लेकिन दुर्भाग्य था कि उनकी प्रजा ने भी उनको अपना राजा स्वीकार कर लिया। स्पष्ट हैं कि आमेर व जोधपुर की राजा व प्रजा दोनों के चरित्र में उस काल के अनुसार स्वार्थ परंपरा ही दृष्टव्य होती है जहाँ नैतिक मूल्यों में कमी रही जिन्होंने स्वाभिमान व स्वतंत्रता के स्थान पर अधीनता, विलासिता के क्षणिक भौतिकतावादी सुखों को चुना। इसके विपरीत मेवाड़ के शासकों ने तो एक हजार वर्षों तक निरंतर विदेशी आक्रान्ताओं से लोधा लिया और यहाँ की प्रजा ने भी मुगल अनुयायी जगमाल या अगर-सगर को अपना

राणा स्वीकार नहीं किया चाहे उसके लिए उनको गेहूं छोड़कर मक्की ही क्यों ना खानी पड़ी हो या फिर राणा जी के साथ ही वनचर होकर जंगलों व पहाड़ियों पर ही निवास क्यों न करना पड़ा हो। सत्य ही हैं कि “जटे राणाजी केवे, वठे ही उदयपूरा”



चित्र 2: हल्दीघाटी युद्ध ¹⁰



चित्र 1: राष्ट्रद्रोहियों का दमन और राष्ट्र प्रथम की प्रताप की वैदेशिक नीति

मुगलों से मिलीभगत कर चुके चावंड के लुणा राठौड़ के दमन¹¹ के उदाहरण से राणा प्रताप ने यही सीख दी कि 'घर के भेदी' और 'राष्ट्रद्रोही' के लिए मेवाड़ जैसे राष्ट्र में कोई स्थान नहीं है, यहाँ तक कि प्रताप ने अपने भाइयों मुगल सहयोगी जगमाल, अगर-सगर को भी मेवाड़ में स्थान नहीं दिया। ये प्रताप की वैदेशिक नीति और राष्ट्र प्रेम के परिचायक हैं जो उनके 'राष्ट्र-प्रथम की नीति' का परिचायक है।

नैतिक मूल्यों व आदर्शों से परिपूर्ण महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व से अनेकों जीवन मूल्य व अच्छी मानवीय बातें सीखने को मिलती हैं। राणा के जीवन से एक मानव को विश्व बंधुत्व सहित राष्ट्र शासन हेतु सार्वकालिक प्रासंगिक गुणों से परिचय होता है। उन्होंने अपना जीवन सच्चे मानवतावादी राष्ट्रभक्त भारतीय के जैसा व्यतीत किया। उन्होंने अपना राज्य प्रभु श्रीराम जी की मर्यादा के अनुसार चलाया। श्री गीता जी में उल्लिखित राजन्य निर्देशों व धर्म सन्देशों का उन्होंने निरन्तर पालन किया। संकट काल में भी वे धर्मच्युत नहीं हुए और अभावों में भी वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। मोहमाया या रागद्वेष में वे कभी नहीं फंसे। विमाता की ओर से उपेक्षित होने पर भी संकट काल में उन्होंने अपने पिताश्री के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया और उनके द्वारा निर्धारित स्वातन्त्र्य लक्ष्य के लिए आजीवन संघर्ष किया और इसी आदर्श को विरासत के रूप में 1947 ई. तक इस मेवाड़ राज्य ने संभाल कर रखा। इस प्रकार राणा का शासन काल वर्तमान भारत की वैदेशिक नीति सहित सम्पूर्ण विश्व के जीवन मूल्यों को प्रभावित करता हुआ सार्वकालिक स्वीकार्य व सार्वदेशिक प्रासंगिकता से अस्तित्वमान था, है और आगे भी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजेन्द्र शंकर भट्ट, मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1997
2. हुकम सिंह भाटी, महाराणा प्रताप ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर
3. पंकज राठौड़, हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत, कौटिल्य का ऐतिहासिक व्यक्तित्व एवं राजनीतिक दर्शन, संस्कृत भारती, नई दिल्ली, 2020
4. Mathur LP. War Strategy of Maharana Pratap, Publication Scheme; 2005.
5. सं.नारायण सिंह भाटी, नैणसी,मारवाड़ रा परगना री विगत, (प्रताप शोध प्रतिष्ठान संग्रह, उदयपुर मे संग्रहित)

6. आर.एस.माथुर, रिलेशनस ऑफ़ हाडाज विद मुग़ल एम्पररस,
7. आर.पी.व्यास,महाराणा प्रताप, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
8. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर
9. सिटी पेलेस म्यूजियम, उदयपुर से प्राप्त, आभार
10. देवी सिंह मंडावा, स्वतंत्रता के पुजारी महाराणा प्रताप, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर 2020.